# हड्डी जोड़ने मे महारथी पारंपरिक चिकित्सक विदेशों मे हो रहे हैं लोकप्रिय

*** 40 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग**

*** 110 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान**

**छत्तीसगढ़ मे वनौषधियों एवं कीटों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य मे टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने के लिये वनौषधियों के विषय में उपलब्ध पारंपरिक ज्ञान समृद्ध है। 40 से भी अधिक प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक रुप से होता है। यूं तो हड्डी को जोड़ने में सैकड़ों पारंपरिक चिकित्सक लगे हुये है पर सर्वेक्षणों के माध्यम से 110 ऐसे विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की गई है जो कि पीढ़ीयों से यह कार्य कर रहे है।**

**वनौषधि राज्य छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों में सामान्यतौर पर उगने वाली वनस्पतियों कोहा और बबूल का प्रयोग विशेषज्ञों के बीच लोकप्रिय है। कोहा की छाल का प्रयोग होता है जबकि बबूल के बीजों का प्रयोग होता है। कोहा की छाल को चूर्ण के रुप में आंतरिक तौर पर दिया जाता है। छाल का लेप प्रभावित भाग मे लगाकर हड्डी को बिठाकर बांध दिया जाता है। एक ही समय मे किया गया आंतरिक और बाहरी प्रयोग शीघ्रता से लाभ पहुंचाता है। बबूल के बीजों का प्रयोग आंतरिक रुप से लंबे समय तक किया जाता है। दक्षिण छत्तीसगढ़ मे हड़जोड़ से बने पारंपरिक व्यंजन भी प्रचलन मे है। इस क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक बेझिझक यह स्वीकार करते है कि उनके पूर्वजों ने हड़जोड़ के औषधीय उपयोग की जानकारी उन वन्य पशुओं से एकत्र की जो कि इसका प्रयोग इसी उद्देश्य के लिये करते हैं। राज्य के बहुत से भागों मे हड़जोड़ की खेती भी की जा रही है पर पारंपरिक चिकित्सक वनों से एकत्र की गई हड़जोड़ के प्रयोग को प्राथमिकता देते हैं। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक भेलवा नामक वनौषधि का प्रयोग आमतौर पर करते हैं। इससे बना हलवा पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। सामान्यतया ये चिकित्सक क्षारीय भूमि से एकत्र की गई वनस्पतियों का प्रयोग हड्डी रोगों के लिये करते है। देशज वनस्पतियों के अलावा विदेशी खरपतवारों जैसे युओपेटोरियम का नया उपयोग भी पारंपरिक चिकित्सकों ने ढूंढ़ निकाला है। वे इस विदेशी आक्रांता की सहायता से विशेष प्रकार के तेल का निर्माण करते है जो कि हड्डी के दर्द को आश्चर्यजनक रुप से कम करता है। बहुत से पारंपरिक चिकित्सक विषाबेल और गुग्गुल जैसी वनौषधियों का प्रयोग करते है। इन वनौषधियों के लिये उन्हे पड़ोसी राज्यों पर निर्भर रहना पड़ता है। ग्रामीण अंचलों में केतकी नामक वनौषधि का प्रयोग निवासी हड्डी टूटने पर पशु चिकित्सा मे करते है। हल्दी की कई जंगली जातियों का उपयोग भी प्रचलन में है।**

**हड्डी को जोड़ने मे महारत रखने वाले विशेषज्ञ लोकप्रिय है। न केवल स्थानीय बल्कि देश विदेश के रोगी भी इन चिकित्सकों की सस्ती और उपयोगी चिकित्सा पद्धति का लाभ ले रहे है। बहुत से पारंपरिक चिकित्सक तो इस तरह की चिकित्सा के लिये कुछ भी नही लेते है। पंकज अवधिया का मानना है कि ये विशेषज्ञ सामाजिक सम्मान के हकदार है। इनके ज्ञान को मान्यता देकर आधुनिक प्रायोगिक विधियों की सहायता से इसे वैज्ञानिक आधार प्रदान करना आवश्यक है।**